तबले के स्वतन्त्र–शैलिया क्षेत्र में बदलते परिदृश्य का अध्ययन

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा से संगीत में पी0 एच0 डी0
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की
रूपरेखा
2015

निर्देशिका :	शोधार्थिनी :
डॉ0 नीलू शर्मा	सोनम सक्सैना
एसोसिएट प्रोफेसर	संगीत विभाग (तबला)
संगीत विभाग	

संगीत विभागाध्यक्षा	कला संकाय प्रमुख
प्रो0 श्रीमती सुभदा कुमारी सतसंगी	प्रो0 रागिनी रॉय

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट डीम्ड यूनिवर्सिटी दयालबाग़,

आगरा–282005

भूमिका–

संगीत प्रदर्शनात्मक कला है। इसके अन्तर्गत गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों कलाओं का समावेश है। स्वर व लय इसके दो आधारभूत तत्त्व है। लय का प्रदर्शन घन एवं अवनद्ध वाद्यों के माध्यम से किया जाता है, इसलिए इस श्रेणी के वाद्यों को लय एवं ताल वाद्य भी कहते है।

भारतीय संगीत में पिछले कुछ शताब्दियों से अवनद्ध वाद्य तबला ने प्रचार–प्रसार की दृष्टि से सर्वाधिक प्रगति की है। आज उत्तर भारत के संगीत का सर्वाधिक लोकप्रिय ताल–वाद्य तबला है। संगीत में तबला वाद्य का महत्त्व सर्वविदित है। तबला जहाँ गायन की विविध शैलियों, तंत्र वाद्यों एवं नृत्य की संगति में अनिवार्य वाद्य बन चुका है, वही स्वतन्त्र वादन प्रस्तुतिकरण में भी अपना अलग अस्तित्व रखता है। इसका एकमात्र कारण यही है कि इस वाद्य में अन्य अवनद्ध वाद्यों जैसे पखावज, ढोलक, नाल इत्यादि वाद्यों के सभी गुण विद्यमान हैं। शनैः–शनैः तबला वाद्य की स्वाभाविकता एवं मौलिकता के आधार पर इसका स्वतन्त्र अस्तित्व प्रचार में आया और केवल लहरे की संगति के साथ तबले का स्वतन्त्र वादन रंजक लगने लगा।

स्वतन्त्र तबला वादन से तात्पर्य जब तबला वादक द्वारा तबले पर सारंगी या अन्य किसी वाद्य पर बजाए गए निश्चित लहरे के साथ उस ताल में विभिन्न प्रकार की वादन–शैलियों का प्रदर्शन अपनी क्षमतानुसार किया जाता है, तो उसे स्वतन्त्र वादन कहते है।

संगीत गुरुमुखी विद्या है। प्राचीन काल से ही भारतीय संगीत का शिक्षण गुरुकुल में गुरु–शिष्य प्रणाली के माध्यम से होता चला आ रहा है। इस प्रणाली के अन्तर्गत शिष्य गुरु के सम्मुख प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा प्राप्त करता था एवं गुरु के मार्गदर्शन से लाभन्वित होता था। शनैः–शनैः गुरुजनों के विभिन्न कलात्मक दृष्टिकोण से कला में विविधता उत्पन्न हुई। प्रत्येक गुरु की अपनी निजी शैली के कारण गुरु–शिष्य परम्परा घराना पद्धति में परिवर्तित होती गई।

20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही स्व0 पं. विष्णु नारायण भातखण्ड़े एवं स्व0 पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी के अथक् प्रयासों के फलस्वरूप मानव–जीवन में संगीत की उपयोगिता को समझकर संगीत की अन्य विधाओं के साथ तबले की शिक्षा भी विद्यालयीन शिक्षा पद्धति के माध्यम से जन साधारण को सुलभ हो गई व शिक्षण संस्थाओं में तबले को पृथक् विषय के रूप में मान्यता प्राप्त हुई अर्थात सर्वजन साधारण को सुलभता की दृष्टि से संगीत की शिक्षा भी अन्य विषयों की भाँति विद्यालयीन शिक्षा प्रद्धति के माध्यम से दी जाने लगी। संस्थागत शिक्षा के दौरे में विद्यार्थी, कलाकार व शिक्षक दोनो के शिक्षा निर्देशन में शिक्षा ग्रहण कर रहे है।

विश्वविद्यालय स्तर पर घरानेदार एवं संस्थागत शिक्षक दोनों ही अपनी शिक्षण प्रणाली के द्वारा तबला वादन कला को उच्चतम शिखर की ओर अग्रसर कर रहे है। वर्तमान में माध्यमिक स्तर से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक तबला एक विषय के रुप में मान्य है, विषय प्रगति के साक्ष्य शोध कार्य भी हो रहे है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

- तबला–वादन शिक्षण के बदलते आयाम– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, कृतानन्द पांडे
- स्वतन्त्रता के पश्चात् उत्तर भारत में तबला वादन की संस्थागत शिक्षण–प्रणाली का समीक्षात्मक अध्ययन, अमित कुमार वर्मा
- वर्तमान उत्तर भारतीय तबला वादन परम्परा की गणितीय प्रकिया का विश्लेषणात्मक अध्ययन– आलोक कुमार

पुस्तकें–

- राम, डा. सुदर्शन, तबले के घराने वादन शैलियाँ एवं बंदिशें कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्टीब्यूटर्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000
- मराठे, डा. मनोहर, ताल वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) भालचंद्राव, शर्मा पुस्तक सदन ग्वालियर
- शुक्ल, योगमाया, तबले का उदगम, विकास और वादन शैलियाँ, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली प्रथम संस्करण 1987
- माईणकर, सुधीर, तबला वादन कला और शास्त्र अ. भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मिरज

पत्रिकाएँ–

- तबला वादन की पारम्परिक बंदिशें – डा. नीलू शर्मा, संगीत कला विहार, जनवरी 2013
- तबला वादन की विस्तारशील रचनाएँ – पं. विजय शंकर मिश्र, संगीत कला विहार, दिसम्बर 2012
- तबले की बंदिशों का उदभव एवं विकास – डां. गौरांग भावसार, संगीत कला विहार, जुलाई 2011
- वर्तमान में तबला विषय की संस्थागत शिक्षा : दशा और दिशा – अमित कुमार वर्मा, संगीत मासिक पत्रिका, मार्च 2011
- संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली का प्रारम्भ एवं मंच प्रदर्शन में योगदान – ऋतु कौषिक, संगीत मासिक पत्रिका, जून 2012
- तबला वादन में उपज का महत्त्व एवं उपयोगिता – प्रणव पराडकर, संगीत मासिक प्रत्रिका, जून 2012
- तबला स्वतन्त्र वादन की कला का सौन्दर्य – डां. प्रवीण उद्धव, संगीत कला विहार, अप्रैल–मई 2010
- तबला शिक्षण के संदर्भ में गुरु शिष्य परम्परा एवं संस्थागत शिक्षण प्रणाली पर संक्षिप्त विचार – मुकुंद भाले, संगीत कला विहार, मार्च 1957

वर्णित पुस्तकों एवं पत्रिकाओं में लेखक ने घराने की वादन शैलियों का वर्णन किया है। लेखक के अनुसार प्रत्येक घराने की बंदिशों में कायदे, लम्बी गतें, विविघ लयकारी युक्त तिहाईयों की अपनी–अपनी विशेषता है। इन पुस्तकों के माध्यम से तबला स्वतन्त्र वादन के संक्षिप्त क्रम को दृष्टिगत किया जाता है। इन पुस्तकों के अन्तर्गत तबले के साहित्य से लेकर उसके कलात्मक गुणों का तथा वर्तमान में तबला वाद्य के लोकप्रिय होने का अध्ययन किया गया है। इन पुस्तकों के माध्यम से हमें तबले का विस्तृत ज्ञान तो प्राप्त होता है, परन्तु यह कही ज्ञात नही होता कि वर्तमान समय में तबला स्वतन्त्र वादन के क्षेत्र में कितने ही परिवर्तन आ गए है।

समय के बदलाव के अनुरुप परिवर्तन अपेक्षित है। आज के वैज्ञानिक व इन्टरनेट के

युग में विद्यार्थियों को संस्थागत शिक्षा के साथ–साथ वैज्ञानिक उपकरणों के विकास ने तबले को कई तरह से प्रभावित किया है। वैज्ञानिक युग में इलैक्ट्रानिक तकनीकि की आधुनिकता दृष्य–श्रव्य सामग्री ने तबले के क्षेत्र में अपार सफलता की है, अतः तबला स्वतन्त्र वादन भी इससे अछुता नही रहा है। तबला स्वतन्त्र वादन भी प्रतिदिन अपने उत्कर्ष की ओर विराजमान होता जा रहा है। कलाकार के कलात्मक दृष्टिकोण में विविधता आ गई है। कलाकार के शिक्षण का माध्यम गुरु–शिष्य परम्परा हो या संस्थागत शिक्षा हो, कलाकार ने अपनी सृजनात्मकता व कलात्मकता के माध्यम से स्वतन्त्र वादन को विभिन्न ढंगों में प्रस्तुत कर, तबला मंच–प्रदर्शन में तबला स्वतन्त्र वादन को राष्ट्रीय ही नही अपितु अन्तराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलाई है।

स्वतन्त्र वादन के अन्तर्गत तबला वादन इतना निखर के आया है कि आज हर कलाकार तबला वादन में नित नये प्रयोग कर रहा है। कलाकार ने अपनी सृजनात्मकता, कल्पना एवं रचनात्मक प्रवृति से अपनी भावनाओं को मूर्त किया है। तबला वाद्य में प्रयुक्त सभी बन्दिशों की विषय वस्तु, अर्थहीन भाषा युक्त बोल अर्थात निरर्थक बोल होते है, परन्तु उनकी अपनी गति है, रंग सौन्दर्य है, जो इस अमूर्त सांगीतिक भाषा के महान वादकों का जीवंत प्रयोग है। तबला वाद्य का साहित्य समृद्ध है। समृद्ध साहित्य में अनेकों प्रयोग अपेक्षित है। कलाकारों ने बन्दिशों के विस्तार में, गणितीय प्रयोग, पृथक–पृथक ढंग की तिहाईयों के प्रयोग, ठेकों के भराव के विविध ठंग इत्यादि अनेकों प्रकार प्रस्तुत किए है, जो इस वाद्य की समृद्धि हेतु महत्वपूर्ण है, साथ ही जनरूचि के आधार पर अन्य वाद्यों के साथ भी इस वाद्य के विविध ढंग प्रयोग किए जा रहे है। अतः बदलते परिदृश्य में इस सभी प्रयोगों एवं परिवर्तनों को ज्ञात करने हेतु शोधकत्री द्वारा प्रस्तुत शोध–विषय का चयन किया गया है।

विषय कथन– तबले के स्वतन्त्र वादन क्षेत्र में बदलते परिदृश्य का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य–

1.तबला एवं स्वतन्त्र वादन का अध्ययन।

2.वैज्ञानिक उपकरणों के आधार पर स्वतन्त्र वादन का अध्ययन करना।

3.संस्थागत शिक्षण के माध्यम से तबला स्वतन्त्र वादन के प्रारूप का अध्ययन।

4.तबला स्वतन्त्र वादन में हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन।

परिसीमांकन– 1.शोध विषय गत 50 वर्षो तक सीमित रहेगा।

2. प्रत्येक घरानें के कम से कम दो कलाकारों का साक्षात्कार लिया जायेगा।

अध्ययन विधि– वर्णनात्मक विधि, सर्वेक्षण विधि।

अध्ययन के स्त्रोत– पुस्तकालय, संग्रहालय, दृश्य श्रव्य सामग्री व विद्वानों से विचार विर्मश के माध्यम से तथ्यों का संकलन।

अध्ययन की रूपरेखा–

प्रथम अध्याय–

- तबला वाद्यः एतिहासिक पृष्ठभूमि

1.उत्पत्ति एवं विकास

2.सन्दर्भ सहित्य का सर्वेक्षण

द्वितीय अध्याय–

- तबला स्वतन्त्र वादनः अर्थ एवं सिद्वान्त

तृतीय अध्याय–

- घराना परम्परा में तबला स्वतन्त्र वादन के प्रस्तुतिकरण में पेशकार, कायदा, परन, तोड़े, तिहाई, रेला आदि के विभिन्न प्रारूप

1.दिल्ली घराना

2.लखनऊ घराना

3.अजराड़ा घराना

4.फरूर्ख़ाबाद घराना

5.बनारस घराना

6.पंजाब घराना

चतुर्थ अध्याय–

- संस्थागत शिक्षण संस्थाओं में तबला स्वतन्त्र वादन का प्रशिक्षण

  1.संगीत शिक्षण संस्थाएँ

  2.विश्वविद्यालय एवं उससे सम्बद्ध शिक्षण संस्थाएँ

  3.घरानेदार तबला वादन एवं विद्यालयीन तबला वादन में अन्तर एवं कारणों पर प्रकाश

पंचम अध्याय–

- तबला स्वतन्त्र वादन एवं सृजनशीलता

  1.ठेको का भराव एवं सृजनशीलता

  2.बोलो के द्वारा सृजनशीलता

  3.बन्दिशों के कलात्मक प्रयोगों द्वारा सृजनशीलता

  4.विभिन्न घरानों के तबला वादन में दाव गॅास के प्रयोग एवं सृजनशीलता

  5.लयकारियों के माध्यम से सृजनशीलता

  6.गणितीय प्रकिया के माध्यम से सृजनशीलता

षष्ठम अध्याय–

- तबला स्वतन्त्र वादन का बदलता परिदृश्य–कारक

1.मंच प्रदर्शन में पेशकार, कायदा, परन, तोड़े, रेला तिहाई, आदि के क्रम परिवर्तन का विवेचन

2.बदलते परिदृश्य में आए दाव गॅास के परिवतनों को बताना

3.वैज्ञानिक उपकरणों का प्रभाव

4.जनरूचि

5.अन्य कारक

6. मंच प्रदर्शन एव उसको आकर्षक बनाने हेतु सम्यक् सुझाव

सप्तम अध्याााय–

उपसंहार

इस शोध विषय के माध्यम से विद्यार्थियों को निम्नलिखित लाभ होंगे–

- विद्यार्थियों को पारम्परिक तबला स्वतन्त्र वादन के कलाकारों का ज्ञान।
- विद्यार्थियों को तबला स्वतन्त्र वादन के अन्तर्गत सृजनशीलता का ज्ञान।
- विद्यार्थियों को तबला स्वतन्त्र वादन के माध्यम से नित नये प्रयोग का ज्ञान।
- विद्यार्थियों को तबला स्वतन्त्र वादन के बदलते परिदृश्य एवं उसके कारकों (मंचीय प्रस्तुति, वैज्ञानिक उपकरण, जनरुचि) इत्यादि का ज्ञान।
- तबला स्वतन्त्र वादन मे जनरुचि एवं उसके प्रभाव का ज्ञान।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- मिस्त्री, डॉ., आबान ई, पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें, पं0 केकी0 एस0 जिजिना स्वर साधना समिति, मुम्बई
- शुक्ल, डॉ., योगमाया, तबले का उद्‌गम विकास और वादन शैलियाँ, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
- राम, डॉ. सुदर्शन, तबले के घरानें, वादन शैलियाँ एवं बन्दिशें, कनिष्क पब्लिशर्स ड़िस्टीब्यूटर्स, नई दिल्ली
- राय, राम नरेश, ताल दर्शन मंजरा, पाठक पब्लिकेशन इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 1998
- सक्सैना, ड़ॉ. वसुधा, ताल के लक्ष्य–लक्षण स्वरूप में एकरूपता, कनिष्क पब्लिशर्स ड़िस्टीब्यूटर्स, नई दिल्ली

पत्रिकाए–

- संगीत मासिक पत्रिका, जून 2012
- संगीत कला विहार, जनवरी 2013
- ताल अंक